विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र-तृतीय Semester 3

कौशलविकास पाठ्यक्रम	**अभिनय एवं पटकथा लेखन**	**पूर्णाङ्क -100**
(Skill development course)	**(Acting and Script Writing)**	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper HSA–S311		**आन्तरिक परीक्षा-30**
		क्रेडिट 04

पाठ्यक्रम (Course)
खण्ड क (Section- A) अभिनय
खण्ड ख (Section- B) पटकथा लेखन

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

अभिनय नाटक के प्रायोगिक पक्ष से सम्बन्ध रखता है और यह अभिनेता पर आधारित है, जबकि पटकथा लेखन का सम्बन्ध समाज से है इस पत्र का उद्देश्य दोनों कलाओं के सैद्धान्तिक पक्षों को आत्मसात कराना है। सृजन का प्रशिक्षण और नाट्य की प्रस्तुति व्यक्ति की स्वाभाविक प्रतिभा को प्रस्फुटित करने में सहायक हैं। यह पत्र दोनों की चर्चा छात्रों से करता है, साथ ही छात्रों की अभिनयात्मक प्रतिभा को धार देने में भी सहायक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र में छुपी हुई अभिनय की प्रतिभा जागरित हो सकती है।
2. नाट्य आदि के लेखन को नई दिशा मिल सकना सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड क (Section – A)

अभिनय

घटक(Unit) 1 - (क) अभिनय के लिये सक्षम व्यक्ति (कुशल, विदग्ध, प्रगल्भ, जितश्रमी)।

(ख) लोकधर्मी एवं नाट्यधर्मी अभिनय।

(ग) नाट्यप्रयोक्ता गण – सूत्रधार, नाट्यकार, नट, कुशीलव, भरत, नर्तक, विदूषक इत्यादि।

घटक (Unit) 2 - (क) पात्रों की भूमिका नियोजन - विभाजन के सामान्य सिद्धान्त, गौणपात्रों की भूमिका, स्त्रीपात्रों की भूमिका, पात्रनियोजन के विशिष्ट प्रयोजन।

(ख) अभिनय के प्रकार- अनुरूप, विरूप, रूपानुसारीणी।

घटक (Unit) 3 - अभिनय की परिभाषा और प्रकार -

(क) आंगिक- अंग, उपांग, प्रत्यंग, (ख) वाचिक- स्वर, स्थान, वर्ण, काकु, भाषा।

(ग) सात्त्विक, (घ) आहार्य- पुस्त, अलंकार, अंगरचना, सञ्जीव (वेषभूषा प्रसाधन) ।

खण्ड –ख (Section–B)

पटकथा लेखन

घटक (Unit) 1 - (क) नाटकीय रचना के प्रकार- सुकुमार, आविद्ध।

(ख) कथावस्तु की प्रकृति- आधिकारिक, प्रासंगिक, दृश्य, सूच्य।

घटक (Unit) 2 - कथावस्तु का विभाजन

(क) कथावस्तु के स्रोत- प्रख्यात, उत्पाद्य, मिश्र।

(ख) कथावस्तु के उद्देश्य- कार्य (धर्म, अर्थ, काम)।

(ग) कथावस्तु के घटक- पञ्च अर्थ प्रकृतियाँ, कार्यावस्थाएँ एवं सन्धि एवं उनके उपभेद।

(घ) पाँच प्रकार के अर्थोपक्षेपक।

घटक (Unit) 3 - संवाद लेखन, संवाद के प्रकार- सर्वश्राव्य (प्रकाश्य) अश्राव्य (स्वगत) नियतश्राव्य (जनान्तिक, अपवारित), आकाशभाषित।

घटक (Unit) 4 - (क) नाटक की अवधि (ख) तीन घटक- समय, कार्य और स्थान (ग) नाटक का आरम्भ - पूर्वरंग (रंगद्वार) नान्दी, प्रस्तावना, प्ररोचना (घ) अभिज्ञानशाकुन्तल के सन्दर्भ में अभिनय, वस्तु और संवाद का विश्लेषण।

अनुशंसित ग्रन्थ (Suggested Books/Readings)

1. Ghosh, M.M. Nāṭyaśāstra of Bharatamuni.
2. M.M. Ghosh, Nāṭyśāstra of Bharatamuni, vol-1, Manisha Granthalaya, Calcutta, 1967. HSAs, The Daśarūpaka : A Treatise on Hindu Dramaturgy, Columbia University, NewYork , 1912.
3. Adyarangachrya, Introduction to Bharata's Nāṭyaśātra, Popular Prakashan Bombay, 1966.

पंचम पत्र - जेनेरिक विषय के अन्तर्गत छात्र प्राचीन भारतीय इतिहास HHS-G301 / राजनीति विज्ञान/ योग विज्ञान को ले सकते हैं (सम्बद्ध विषय के पाठ्यक्रम सम्बन्धित विभाग से प्राप्य)

पंचम - अनिवार्य अतिरिक्त पत्र भारतीय ज्ञान परम्परा

सत्र २०१९-२० से प्रभावी